!!!~~~!!! बन में चराय ल्याई सिंह ने गाय !!!~~~!!!

एक अचंभो देख्यो मेरी माय, बन में चराय ल्याई सिंह ने गाय
बन में चराय ल्याई सिंह ने गाय, बन में चराय ल्याई सिंह ने गाय

किन रे गाँव कि उलटी रीत, निचे छान उपरण भीत
दरिया को पाणी मंडेरी चढ़ ज्याय, बन में चराय ल्याई सिंह ने गाय.....

आग जले स्यु लौ बुत जयाय, पोवणवाली ने रोटी खाय
छोरा कि गोद में छोरा कि माय , बन में चराय ल्याई सिंह ने गाय.....

कह गए नाथजी ऐसी वाणी, बिन जल ताल भरया है पाणी
पेड़ कट्या फिर फल लग ज्याय, बन में चराय ल्याई सिंह ने गाय.....

कह गए गौरख उलटी वाणी, दूध का दूध और पाणी का पाणी
परखन वाला तुरन्त मर ज्याय , बन में चराय ल्याई सिंह ने गाय.....

जय श्री नाथजी की...